17 Week 20 / सप्ताह २०
138-228 / १३८-२२८
SUNDAY / रविवार

Vikram Samvat 2077 / विक्रम सम्वत २०७७
Jyeshtha Krishna 10 / ज्येष्ठ कृष्ण १०
Shak Samvat 1942 / शक सम्वत १९४२
Vaishakh 27 / वैशाख २७

Sun Rise 5 : 17 / सूर्योदय ५:१७ MAY / मई Sun Set 6 : 43 / सूर्यास्त ६:४३

Unit 1

हिंदी भाषा

(क) आधुनिक भारतीय भाषाओं का उद्भव और विकास

(ख) हिंदी भाषा का परिचय एवं विकास

(ग) प्रयोजनमूलक हिंदी : कार्यालयी हिंदी, विज्ञापन में हिंदी

Scanned by CamScanner

02/04/2020

विक्रम संवत् २०७७ / Vikram Samvat 2077
ज्येष्ठ कृष्ण ११ / Jyeshtha Krishna 11
शक संवत् १९४२ / Shak Samvat 1942
वैशाख २८ / Vaishakh 28

सप्ताह २१ / Week 21
१३९-२२७ / 139-227
सोमवार / MONDAY 18

सूर्योदय ५:१७ / Sun Rise 5 : 17 | मई / MAY | सूर्यास्त ६:४३ / Sun Set 6 : 43

अपरा एकादशी व्रत

आधुनिक भारतीय भाषाओं का उद्भव और विकास

(पृष्ठभूमि)

- भाषा - भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है।
- उद्भव - उत्पत्ति, शुरुआत
- भाषा की परिवर्तनशील प्रकृति → भाषा सदैव एक सी नहीं रहती है वह समय के साथ बदलती है। जैसे-जैसे मनुष्य जीवन और समाज में बदलाव आता है भाषा भी बदलती रहती है ऐसा नहीं हो सकता की समाज बदले और भाषा न बदले। अत: भाषा के विकास के माध्यम से हम, समाज के बदलाव का आकलन कर सकते हैं।
- किंतु भाषागत इस परिवर्तन में सैकड़ो वर्ष लगते हैं।
- जैसे आज 'हिंग्लिस भाषा' - हिंदी + इंग्लिश का प्रयोग होता है। यह आज के तकनीकी, तेजी से बदलते आधुनिक समाज की एक पहचान है।

हम सब दीवाने हैं। उनमें कौन किसको दीवाना कहे?
We are all mad. Who can, therefore, call whom mad ?

Scanned by CamScanner

• वास्तव में समाज में सदैव (प्रदोष) दो वर्ग रहे हैं
उच्चवर्ग (शिष्ट जन)
आमजन
] → इन दोनों द्वारा अलग-अलग भाषा का प्रयोग उनके वर्गभेद का प्रतीक है।

इसी से हर युग में दो सामानान्तर भाषाएँ भी प्रचलित होती है।
(जैसे अंग्रेजी आज भी हमारे समाज में उच्चवर्ग की भाषा, और हिंदी आमजन की।)

उच्चवर्ग, आमजन द्वारा प्रयुक्त भाषा का प्रयोग करना उचित नहीं मानता। लेकिन जब उच्च वर्ग की भाषा इतनी रूढ़ हो जाती है कि उसमें बदलाव की संभावना ही नहीं रहती तो, जनसामान्य की नवीनता, ताजगी से भरी भाषा मुख्य भाषा के रूप में विकसित होने लगती है। ~~फिर~~ उसमें साहित्यिक रचनाएँ होती है, उसे विशिष्ट भाषा का दर्जा मिलता है। फिर जनसामान्य का संपर्क उससे कट जाता है। सामान्य जन पुनः नई भाषा को जन्म देता है। यह सिलसिला चलता रहता है। इनके घात-प्रतिघात से भाषा विकसित होती रहती है।

अमृत भी, उसमें जहर पड़ने से जहर बन जाता है।
Even nectar turns into poison is added to it.

2020

Scanned by CamScanner

आधुनिक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति

भारतीय आर्यभाषाओं का इतिहास लगभग साढ़े तीन हजार वर्षों का है। विकास की दृष्टि से इसे तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है —

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक)
2. मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल (500 ई.पू. से 1000 ई० तक)
3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल (1000 ई. से वर्तमान समय तक)

Scanned by CamScanner

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा → संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक है। जिसने विश्व को धर्म, संस्कृति, दर्शन एवं सभ्यता का मार्ग दिखाया। यह भाषा समय के साथ दो भागों में विभक्त हो गई —

संस्कृत

वैदिक संस्कृत

↓

वैदिक साहित्य में वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, वेदांग आरण्यक ग्रंथ, उपनिषद आते हैं।

↓

वेद का अर्थ है — ज्ञान

↓

चार वेद — ऋग्वेद — मानव जाति का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ है।

सामवेद — ऋग्वेद के मंत्रों को स्वर सहित उच्च ध्वनि से गाने की विधि दी गई है।

यजुर्वेद → ऋग्वेद के अंशों का यज्ञों में किस प्रकार, किस प्रयोजन से विधिवत प्रयोग किया जाए।

~~अथर्ववेद~~ अथर्ववेद → जीवन के भौतिक तत्वों का वर्णन है।

लौकिक संस्कृत

- इतिहास — रामायण महाभारत
- पुराण — इसमें अवतारों की धार्मिक कथाएं हैं। कुल 18 पुराण उपलब्ध हैं जिनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध है — 'भागवद' पुराण
- कालिदास, भारवि, भाव्य आदि का साहित्य
- नाट्य शास्त्र
- पाणिनि का व्याकरण 'अष्टाध्यायी'

आदमी अपने भितरी आवाज को भी न दबायें, भले ही वह अकेला हो।
Man must never suppress his inner voice even if he stands alone.

Scanned by CamScanner

मध्यकालीन आर्य भाषाएँ

संस्कृत से
- → पालि
- → प्राकृत
- → अपभ्रंश

पालि → संस्कृत की समृद्ध परंपरा का विकास जन भाषा के रूप में हुआ।

- जनभाषा का जो रूप सामने आया, वह पालि भाषा थी।
- इस भाषा का विकास बौद्ध प्रचार-प्रसार के कारण हुआ।
- बौद्ध उपदेशों का संकलन पालि भाषा में हुआ।
- बौद्ध के मौखिक उपदेशों को उनके शिष्यों ने 'पालि' भाषा में 'त्रिपिटकों' के नाम से किया।
- क्योंकि इनका उद्देश्य जनता में बौद्ध धर्म के उपदेशों का प्रचार करना था, इसलिए जन भाषा 'पालि' को अपनाया।

Scanned by CamScanner

• इस काल के प्रमुख रचनाकार है अश्वघोष, दिङ्नाग आदि।

• पालि भाषा में स्वरों का बलाघात पाया जाता है जबकि व्यंजन वैदिक ध्वनियों के करीब है।

प्राकृत → पालि जब लोक व्यवहार की भाषा से अलग हो गई, तब जन सामान्य की एक अलग भाषा प्रयोग में आयी। इस भाषा को प्राकृत नाम दिया गया।

• इसमें जैन साहित्य की रचना हुई।

• इसके प्रथम वैयाकरण विक्रमादित्य की राजसभा के प्रमुख विद्वान आचार्य वररुचि थे।

• प्राकृत भाषाएँ पाँच तरह की थी। जिनकी अपनी-अपनी व्याकरणिक विशेषताएँ थी।

• इसमें सघोष व्यंजनों के स्थान पर अघोष व्यंजनों का प्रयोग मिलता है।

अगर सुख के पीछे पड़ें तो सुख दूर भागता है।
Happiness eludes us if we run after it.

Scanned by CamScanner

अपभ्रंश → प्राकृत भाषा के अंतिम काल में अपभ्रंश भाषा प्रकाश में आयी।

- प्राकृत भाषाओं के क्षेत्रीय रूपों से अपभ्रंश भाषाएं प्रतिष्ठित हुईं।
- इनका समय सन् 500 ईस्वी से सन् 1000 ईस्वी तक माना जाता है।
- अपभ्रंश भाषा साहित्य के मुख्यत: दो रूप मिलते है - पश्चिमी और पूर्वी।
- अनुमानत: 1000 ईस्वी के आसपास अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का जन्म हुआ।
- अपभ्रंश से ही हिंदी भाषा का जन्म हुआ। हिंदी भी, आधुनिक भारतीय भाषाओं में आती है जिनका जन्म 1000 ईस्वी के आसपास हुआ था, किंतु साहित्य रचना सन् 1150 ईस्वी के आसपास शुरू हुई।

विचार लो (लौह) खंड की दीवार को भी भेदता है।
Thought pierces even a wall of steel.

Scanned by CamScanner

विक्रम सम्वत् २०७७ / Vikram Samvat 2077
ज्येष्ठ शुक्ल ०६ / Jyeshtha Shukla 06
शक सम्वत् १९४२ / Shak Samvat 1942
ज्येष्ठ ०७ / Jyeshtha 07

सप्ताह २२ / Week 22
१४९-२१७ / 149-217
गुरुवार / THURSDAY
28

सूर्योदय ५:१२ / Sun Rise 5 : 12
मई / MAY
सूर्यास्त ६:४८ / Sun Set 6 : 48

आधुनिक आर्यभाषाओं का जन्म अपभ्रंशों के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से माना जाता है—

अपभ्रंश ——— आधुनिक आर्य भाषा तथा उपभाषा

पैशाची ——— लहंदा, पंजाबी
ब्राचड ——— सिन्धी
महाराष्ट्री ——— मराठी
अर्द्धमागधी ——— पूर्वी हिंदी
मागधी ——— बिहारी, बंगला, उड़िया, असमिया
शौरसेनी ——— पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती।

Scanned by CamScanner